

>

Title: Submission by Members regarding termination of Suspension of Members from the service of the House under Rule 374.

श्री अधीर रंजन चौधरी (बहरामपुर): सर, कुछ दिनों की अफरा-तफरी, गतिरोध के बाद फिर आप चेयर पर विराजमान हो चुके हैं। यह हम सभी के लिए बड़ी संतुष्टि की बात है, क्योंकि हम सभी आपका बहुत सम्मान करते हैं।

Sir, you are holding the exalted Chair and you trust that we never entertain and, even remotely in wild imagination, it has been never been nurtured by us to dishonour the Chair and disturb the decorum and etiquette of this House.

सर, यह कभी-कभी हो जाता है, सभी समझते हैं, यह आज की बात नहीं है, यह पहले भी हुआ है। इंगलैंड का जो हाउस ऑफ कॉमन्स है, उस हाउस ऑफ कॉमन्स के स्पीकर के बराबर आपके पद की मर्यादा है। आपको स्वयं कास्टिंग वोट डालने का अधिकार है। आप सदन में जो करें, इसके बारे में कभी कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकता है। आपके कहने पर मनी बिल सर्टिफाइड होता है। आप बहुत बड़े पद का कार्य भार गरिमा के साथ पालन करते हैं।

लेकिन कभी-कभी ऐसा हो जाता है, जिसे हम नहीं चाहते हैं, आप नहीं चाहते हैं और सत्तारूढ़ पार्टी भी नहीं चाहती है। अगर देखा जाए, तो 14वीं लोक सभा में 421 घंटे बर्बाद हुए थे, 15वीं लोक सभा में आठ सौ घंटे बर्बाद हुए थे। केवल 15वीं लोक सभा के छठे सत्र में 124 घंटे बर्बाद हुए थे। पहले से यह है। लेकिन आप तय करें कि इसे किसी भी हालत में निपटाना चाहिए, इसको समाप्त किया जाना चाहिए। हम भी चाहते हैं कि सदन की मर्यादा को पूर्णता देकर हम सब सदन की गरिमा को बरकरार रखें। हम यहाँ चर्चा करने के लिए आते हैं। हमारा मकसद सिर्फ चर्चा करना होता है। यहाँ हम कोई तकलीफ देने या सदन में गतिरोध पैदा करने का मकसद लेकर नहीं आते हैं। लेकिन हालात ऐसे हो जाते हैं, जिसको हम भी काबू में नहीं रख पाते और सत्तापक्ष के लोग भी काबू में

नहीं रख पाते हैं । इसलिए किसी-किसी समय ऐसा हो जाता है । इसके कारण हमारी पार्टी के सात मेम्बर्स को निलम्बित किया गया ।

मेरी आपसे दरख्वास्त है, हो सकता है कि उन लोगों ने कुछ गलतियाँ की होंगी, मैं यह नहीं कहता हूँ कि किसी ने कोई गलती नहीं की है, लेकिन इसके पीछे तफ़्तीश होनी चाहिए । तफ़्तीश करने के बाद आप निर्णय कीजिए । अगर एक घटना कारण पूरे सत्र के लिए निलम्बित किया जाए, तो यह ज्यादा हो जाता है । एक कबूतर मारने के लिए उम्रकैद की सज़ा न हो, मैं यह जरूर कहूँगा ।

हमारे जो सात मेम्बर्स निलम्बित हो चुके हैं, उनको वापस लाया जाए और सदन का परिचालन सुचारू रूप से किया जाए, यह मेरी आपसे दरख्वास्त है ।

SHRI T. R. BAALU (SRIPERUMBUDUR): Sir, we feel glad that you are adorning the Chair of the Speaker today. It seems that you were very upset for the past one week, but today we are all happy and it is better. You should not have any concern over these very small issues as compared to the things that are happening in the Lower Houses of various States.

At the same time, the hon. Speaker has taken a decision to name the Members of Parliament who have gone wrong or who have committed misconduct. According to Rule 373, the intention of the Speaker was to suspend them only for one day whereas my friend in the Ruling Party has taken advantage and brought that Resolution under Rule 374. Hence, their suspension got extended for one full Session.

Anyhow, things are coming to an end. I think that the hon. Speaker with a great heart will kindly condone all those types of misconduct and see that all the seven Members of the Congress Party are brought to the House without any further delay. Thank you very much, Sir.

श्री पिनाकी मिश्रा (पुरी): माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले पूरे सदन को इस बात की खुशी है कि आज आप पीठासीन हुए हैं। यह आपका स्थान है और आपने अपना स्थान ग्रहण किया है। आपके बिना इस सदन की मर्यादा कम हुई। हम सबके मन में बहुत पीड़ा थी कि आपके मन में इतनी पीड़ा हुई है।

नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि तफ़्तीश की जाए, लेकिन अब तो तफ़्तीश की कोई बात ही नहीं है। आपने ऑल पार्टी मीटिंग में जो बड़प्पन दिखाया है, उसका सबके सामने इज़हार हुआ है। बड़प्पन दिखाते हुए आपने खुद अपनी तरफ से कहा कि होली के सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में सब भूल-चूक माफ करके आप आगे बढ़ना चाहते हैं। लेकिन मैं सदन की बड़ी पार्टियों से गुज़ारिश करना चाहूँगा कि हम छोटी पार्टियों से कुछ सीख लें। बीजू जनता दल या और भी कई पार्टियाँ हैं, जो कभी वेल में नहीं आती हैं, कभी कार्यवाही को डिसरट नहीं करती हैं, आज तक कार्यवाही को डिसरट नहीं किया है। इसलिए अगर कुछ छोटी सीख हम दे सकते हैं, तो हम से लीजिए।

आदरणीय स्पीकर महोदय, आज आप वापस पीठासीन हुए, इसके लिए हम सब बहुत खुश हैं। हम आशा करते हैं कि जिस तरह से पार्लियामेंट के पहले दो सत्र चले थे, जिसमें कभी कोई प्रॉब्लम नहीं हुई थी और पूरे देश ने इसकी चर्चा की थी और माननीय राष्ट्रपति जी ने भी इसकी चर्चा की थी तथा इसकी वाहवाही हुई थी। आपकी लीडरशिप में यह वाहवाही आगे चलती रहे, हम यही आशा और कामना करते हैं।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

PROF. SOUGATA RAY (DUM DUM): Sir, may I join rest of my colleagues in thanking you for coming back to the Chair of high honour? The House was feeling like an orphan without your presence. There was

nobody to protect our rights and interests. We are happy that the father of the House, the Speaker of the House has come back. Please do not do nit-picking. What you are doing is called 'nit-picking'. Appreciate the sentiment.

We had a very fruitful meeting in your Chamber. Fortunately, we came to the conclusion that all's well that ends well. We discussed the incidents in the House over the last week and we also came to the conclusion that what had happened was not desirable. It is the duty of all of us to uphold the dignity and majesty of the House, which is representative of the people of this country. I am sure that after today that atmosphere will remain; that we shall all strive to keep harmony in the House; and refrain from any action that impinges on the dignity of the House and the unity of the Members.

We, as Opposition, raise our small issues, our demands like we have been demanding for a discussion on the Delhi riots which will happen today but our party, our Chief Minister Mamata Banerjee, has instructed us not to go into the Well of the House. Even if we are leaving the seats, some times, it is actually in violation of what she said. So, we commit to you that we shall cooperate with you in keeping the dignity of the House.

In this context, I refer to my friends from the Congress benches, who have been suspended under a motion moved by the Minister of Parliamentary Affairs, I do not defend whatever they said or whatever they did, but they are Members of the House, elected by more than 1.5 million people, and their absence in the House would deprive that large section of people from being represented in the House.

At the end of it all, with you back in the Chair, with your magnanimity, your generosity, please call our young friends back to this House. Let this House be a composite whole again with you in the Chair.

श्री राजीव रंजन सिंह 'ललन' (मुंगेर): माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले आपको अपने आसन पर देखकर हम सभी लोग बहुत प्रसन्न हैं। पिछले कई दिनों से आप सदन में नहीं आ रहे थे, उससे पूरा सदन काफी दुखी था और आज आप पुनः आसन पर विराजमान हुए हैं, इसके लिए हम आपका अभिनंदन करते हैं।

महोदय, यह सदन देश के लोकतंत्र की सबसे बड़ी संस्था है। यहां हमको हमारी जनता इस बात के लिए चुनकर भेजती है कि सांसद के रूप में, संसद सदस्य के रूप में जो हमारा दायित्व है, हम उसका निर्वहन करें, कानून बनाएं, महत्वपूर्ण मुद्दों पर बहस करें, पक्ष और विपक्ष करें। कभी-कभी हमको यह गलतफहमी हो जाती है कि इस तरह के व्यवहार से जनता बड़ा खुश हो रही होगी, हमें पूरा देश देखता रहता है, लेकिन ऐसा नहीं है, जनता हमें ऐसे देखती है तो वह हमारा बहुत ही मजाक उड़ाती है कि इनको भेजा किसलिए और ये क्या काम कर रहे हैं, इसलिए, हमको यह गलतफहमी नहीं होनी चाहिए।

अध्यक्ष महोदय, आप इस सदन के संरक्षक हैं, हम सभी के संरक्षक हैं। संरक्षक के रूप में आपने 17वीं लोक सभा के गठन के बाद से सदस्यों को संरक्षण देने का जो आपका दायित्व है, उसका आपने बखूबी निर्वहन किया है। आपने सभी माननीय सदस्यों को बराबर मौका दिया है।

लेकिन इसके साथ-साथ संरक्षक को भी हम सभी सदस्यों का, पूरे सदन का सहयोग चाहिए, तभी आप संरक्षक की भूमिका सही ढंग से निभा पाएंगे। इसलिए हमारा भी दायित्व है, हमारा भी कर्तव्य है, हमारा भी फर्ज बनता है कि हम एक संरक्षक को सही दिशा में चलने के लिए पूर्णतया अपने अधिकार की

मांग आपसे करते हुए, हम आपको सहयोग करें। हमें आज के दिन संकल्प लेना चाहिए कि हम आगे से इसका पालन करेंगे और संरक्षक को पूर्ण सहयोग करेंगे।

मैं अपनी ओर से और अपनी पार्टी की ओर से आपको आश्चस्त करता हूँ और जो कुछ भी हुआ है, अच्छा नहीं लगता है कि कोई भी सदस्य, जो हमारे साथी हैं, वे सदन से बाहर हैं। आप स्वतंत्र हैं, आप निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र हैं, आपको अधिकार हैं, हम सभी आपको अधिकृत करते हैं कि आप उन सदस्यों को वापस लाने के लिए जो भी उचित निर्णय हो, वह लें। आपने बोलने का अवसर दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद।

SHRI RAGHU RAMA KRISHNA RAJU (NARSAPURAM): At the outset, we are extremely happy to see our beloved hon. Speaker back in the Chair.

Sir, the incident which has compelled you to suspend the seven hon. Members should not have happened. I personally interacted with most of them, they all were feeling bad for that incident. That should not have happened. That feeling is there with everyone. Therefore, in view of this, I request the hon. Speaker to kindly pardon them considering this as their first mistake.

Hereafter, please bring about certain rules. If you recollect, in the very first Session of the 17th Lok Sabha, the House has not adjourned even for one minute. We all believe that we should bring about new rules that bringing placards in the House should not be allowed.... (*Interruptions*). Every Opposition Member will have the right to protest, everyone will have the options to protest, but this is not the way to allow them to come to Well of the House and all that. It is not right....

(Interruptions). Please bring about the rules whereby discipline and decorum will be maintained. Let the decorum of the House be maintained. Again, I request you on behalf of my Party to lift the suspension of the hon. Members. This is the request from my Party to allow all the suspended Members to come back.

श्री विनायक भाउराव राऊत (रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग): महोदय, मैं तहेदिल से आपका स्वागत करता हूं। आपके बारे में, हम सभी सदस्यों के बीच में एक आदर्श है कि आपने जिस तरीके से हम सभी सांसदों को अपने विचार रखने का मौका दिया है। सदन की गरिमा को आपने अपने कार्यकाल में ऊंचा करने का काम किया है। सहज ही है कि हम आपको हमेशा इस चेयर पर बैठे देखते हैं, लेकिन दुख की बात थी कि हम पिछले तीन-चार दिन से आपको नहीं देख रहे थे, लेकिन आज आप बड़े आनंद से यहां बैठे हैं। भविष्य में भी यही आनंद आपके दिल में, हमारे दिल में, सभी के दिल में बना रहे, यही प्रार्थना करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, हमारे भारत की लोकशाही की कई स्थानीय संस्थाएं, विधान सभा, विधान परिषद और लोक सभा में अलग-अलग तरीके बनाकर रखे गए हैं, लेकिन संसद पूरे देश में एक आदर्श परम्परा का निर्माण करने वाली सभागृह है। इसीलिए हम इस देश की लोकशाही की जो परम्परा है, उसको अच्छा रखने के लिए, अच्छी चर्चा हर एक विषय पर होनी चाहिए और अच्छी चर्चा होकर अच्छा आदर्श प्रस्तुत करने की हमेशा आवश्यकता है।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे विनती करना चाहता हूं कि हमारे महाराष्ट्र विधान सभा के एक ज्येष्ठ सदस्य थे, जो 15 साल तक महाराष्ट्र विधान सभा के अध्यक्ष भी रहे थे। उन्होंने लोक प्रतिनिधियों के लिए आदर्श आचार संहिता के बारे में एक अच्छी किताब लिखी है। उसमें मराठी में उन्होंने एक जगह लिखा है कि हर एक प्रतिनिध को ऐसा करना चाहिए, उन्होंने मराठी में लिखा है- तोल सम्भालुण, बोल लावावा।

इसका मतलब यह है कि आप जुबान से ऐसे शब्द निकालें, आप ऐसा प्रिकॉशन लें, ताकि आपका बैलेंस न गिर जाए । अगर एक बार ऐसी बात बोली दी और आपका बैलेंस गिर गया, तो आप इस लोकशाही में खड़े नहीं हो सकते हैं । मेरी यह विनती है कि यहां पर बालासाहेब भरडे जी की किताब को मंगाकर सभी सदस्यों के लिए उसका हिन्दी और इंग्लिश में अनुवाद किया जाए और उसको सभी सदस्यों को देने की आवश्यकता है । हम विरोधी पार्टी के लोग हैं, हमारी यह जिम्मेदारी है । सत्ता पार्टी के जो शासनकर्ता हैं, उनकी भी यह जिम्मेदारी है । इस लोकशाही की परंपरा को दोनों के सहयोग से कायम रखा जाए, मैं यही विनती करता हूं ।...(व्यवधान)

संसदीय कार्य मंत्री; कोयला मंत्री तथा खान मंत्री (श्री प्रहलाद जोशी) : महोदय, मेरी एक विनती है । मेरा राज्य सभा में एक बिल है । इसलिए, मैं दो मिनट में अपना और सरकार का पक्ष रखना चाहता हूं । मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि आज आप फिर से विराजमान हुए हैं । इससे सभी दलों और सभी सदस्यों को बहुत खुशी मिली है । We are very happy about it, and I am thankful to you that you have come back here and you are in the seat today. जब यहां पर चर्चा हुई थी, तब मैंने उस दिन भी कहा था कि हमारे माननीय प्रधान मंत्री जी सहित हमारी पूरी सरकार किसी भी मेंबर को बाहर करके कार्यवाही नहीं चलाना चाहती है । लेकिन यहां पर दुर्भाग्यवश जो घटनाएं हुई थीं, आपने नेम किया था । उसके बाद रिज़ोलूशन मूव हुआ और फिर निर्णय हुआ है । आज आपने ऑल पार्टी लीडर्स की मीटिंग को अपने चेंबर में बुलाया था, जिसमें आपने आचार-संहिता के बारे में विस्तार से अपना पक्ष रखा है, अपोज़ीशन ने भी रखा है और हमने भी अपना पक्ष रखा है । मैं यह उम्मीद करता हूं कि आपने सर्वदलीय बैठक में जिन चीजों का जिक्र किया है, आप यहां पर भी उन सभी चीजों का जिक्र करेंगे । आपके जिक्र करने के बाद, whatever is the decision and whatever is the expectation, वहां पर आपने जो आशा व्यक्त की है, जब आप अभी यहां पर उन सभी चीजों का जिक्र करेंगे, मैं सभी सदस्यों से यह आशा करता हूं कि in letter and spirit हमें उसका ऑनर करना चाहिए । मैं उसको दोहराना नहीं चाहता हूं, क्योंकि मैं कहूंगा तो वह सरकार की

तरफ से हो जाता है। इसीलिए, अभी आपने सर्वदलीय बैठक में सभी नेताओं के सामने हमसे जो कहा है, आप यहां पर उसका जिक्र करेंगे। मैं इतनी ही उम्मीद और आशा करता हूं कि सभी in letter and spirit उसका पालन करेंगे। मैं फिर से यह कहना चाहता हूं कि सरकार का इरादा किसी को भी बाहर रखकर कार्यवाही नहीं चलाना है। फिर भी बहुत अनुशासनात्मक कार्रवाई हुई थी, तब आपने नेम किया था, यह हुआ है। लेकिन अंत में आप जो आदेश देंगे, हम सभी उसका पालन करेंगे। मेरा अभी दूसरे हाउस में जाना बहुत जरूरी है, क्योंकि वहां पर मेरा माइन एंड मिनरल का बिल लगा हुआ है। आपका जो कुछ भी निर्देश होगा, मेरे सहयोगी श्री अर्जुन राम मेघवाल उसका पालन करेंगे।

श्री नामा नागेश्वर राव (खम्माम) : माननीय अध्यक्ष महोदय, आपको आज के दिन इस चेयर पर देखकर पूरा हाउस खुश है और हम लोगों को भी बहुत खुशी हो रही है। माननीय अध्यक्ष महोदय, जब 17वीं लोक सभा शुरू हुई थी, आपके माध्यम से जिस तरह से दो सेशन चले हैं, उससे पूरे देश में मीडिया और हाउस द्वारा एक मैसेज गया है। सभी पार्टियों के जितने भी मेंबर्स इस हाउस में आए हैं, सभी लोग मिलकर और आपके माध्यम से जिस तरह से इस हाउस को चलाया गया है, हम लोगों ने यहां पर बहुत से ईश्यूज़ डिसकस किए हैं। स्वतंत्र रूप से हाउस चलने के कारण 130 करोड़ लोगों के दिलों के अंदर संसद की वैल्यू बहुत बढ़ी है, वह आपकी ही वजह से हो पाया है। जिस तरह से हाउस में जो कुछ भी हुआ है, उधर से, या इधर से जो कुछ भी हुआ है, वह नहीं होना चाहिए था। मगर आपने जो भी निर्णय लिया है और अभी आप जो भी निर्णय लेंगे, आज नियम 193 के अंतर्गत एक बहुत महत्वपूर्ण मुद्दा है। दिल्ली में लॉ एंड आर्डर के संबंध में जो कुछ भी हुआ है, आज उसके ऊपर चर्चा करने के लिए लिस्टेड हुआ है।

ऐसे महत्वपूर्ण मुद्दे के ऊपर चर्चा करने के टाइम, हमारे जो कुलींस, ऊपर जो भी डिजीजन लिया है, उन लोगों को भी अंदर ले लें। आप बड़े दिल से सस्पेंशन को रिमूव करेंगे तो अच्छा रहेगा। इस हाउस में 543 मेंबर्स में हिंदू, मुस्लिम, जैन, क्रिश्चंस, आदि सभी हैं, उसी तरह से हमारे देश में भी हैं। इसलिए

ऐसे महत्वपूर्ण मुद्दे के ऊपर हम सब लोग इधर-उधर की बात न कर के देश को एक मैसेज जाना चाहिए कि हम लोगों का देश एक है, हम लोग सब एक हैं। उस तरह से हम लोग मिल कर रहें, ऐसा मैसेज आज की इस डिस्कशन के साथ जाना चाहिए। उस तरह से अनुमति देनी चाहिए। माननीय सदस्य, आज के डिस्कशन पर पूरा देश हम लोगों की तरफ देख रहा है। जैसा आज आपको चेयर में देख कर हमें खुशी हुई है, डिस्कशन के साथ भी वही मैसेज जाना है। उसके साथ-साथ आप जो भी डिजीजन लेंगे, हम और हमारी पार्टी आपके डिजीजन को ऑनर करेंगे।

SHRI JAYDEV GALLA (GUNTUR): Sir, I echo the sentiment that has already been expressed in the House by all the Members who are very happy to see you back in the Chair. Your absence has certainly been felt and we look forward to you continuing in the Chair without any absence further.

The protests on the CAA and NRC have been happening across the country and the reason they have been happening I feel is because there is a lack of clarity. Many people are talking many different things but what is the Government's position. That clarity is missing. The riots have vitiated the atmosphere. An immediate discussion to provide that clarity is required, which is why the Members were agitating to provide that clarity because it is an urgent requirement. The sooner the clarity is brought to this issue, the sooner the tension relating to riots and other issues will come down.

Considering the gravity of the situation, I think the agitation of the Members also needs to be looked at through that lens. So, I believe that the suspension should be shortened to the time that has already been spent under suspension. An 'escalation process' can be brought out. The

behaviour may not be desirable but I think you can take a lenient view considering the gravity

of the situation and provide a shorter sentence to them. Also, once a clarity is brought forward on this issue, the tension in the country will certainly come down.

Thank you.

डॉ. निशिकांत दुबे (गोड्डा): आदरणीय अध्यक्ष जी, पिछले चार दिन से जो हो रहा था, मैंने सन् 1952 से ले कर 2020 तक का पूरा इतिहास खंगालने की कोशिश की है। पहली बार ऐसा हुआ कि स्पीकर साहब चार दिन से कुर्सी पर नहीं बैठे हैं। यह किसी के लिए शर्म की बात है या नहीं है, लेकिन भारतीय जनता पार्टी के सभी सांसदों के लिए बहुत ही शर्मनाक और लोकतंत्र के इतिहास की काली घटना थी कि हमारे व्यवहार के कारण, चाहे इस तरफ से हो या उस तरफ से हो और खास कर कांग्रेस के सदस्यों के व्यवहार के कारण अध्यक्ष इतने आहत हैं कि वे चेयर पर नहीं आ रहे हैं। आज आप आए तो भारतीय जनता पार्टी की तरफ से मैं आपका स्वागत करता हूँ।

अध्यक्ष महोदय, रोपा पेड़ बबूल का तो आम कहां से होए। यह जो सवाल है, जो बार-बार प्रश्न उठाया जा रहा है और आज भी अधीर साहब ने प्रश्न उठाते हुए, हमारी पार्टी के ऊपर और खास कर पार्लियामेंटी अफेयर्स मिनिस्टर के ऊपर कहा कि 374-ए में उन्होंने इस तरह का प्रपोजल दे दिया, जिसके कारण पूरे सेशन से सदस्य बाहर चले जाएं। मैंने उस दिन भी बताया कि यह कानून, जब पंडित जवाहर लाल नेहरू, जो कि बहुत बड़े डेमोक्रेट माने जाते थे, जब वे इस देश के प्रधान मंत्री थे तो सन् 1960 में एक दिन नहीं, तीन दिन - 01 दिसम्बर, 07 दिसम्बर और 08 दिसम्बर को इस नियम पर चर्चा हुई थी। स्पीकर महोदय, इसके बाद लगातार इतिहास है कि जैसे 14वीं लोक सभा में ही

कई सांसदों को बिना उनके ऊपर आरोप सिद्ध किए हुए कि उन्होंने चोरी की या नहीं की और उनमें एक-दो सांसद तो ऐसे थे जो उसी कांग्रेस पार्टी से सांसद बन कर फिर 15वीं लोक सभा में आ गए ।

-

14.00 hrs

आपने उनका पूरा कैरियर बर्बाद कर दिया और पूरा का पूरा उनको बाहर कर दिया । यह कहते हुए कि वे चोर हैं, जबकि उनके ऊपर चोरी का कोई इल्जाम साबित नहीं हुआ । इमरजेंसी के दरम्यान इसी कांग्रेस पार्टी ने कई एक सांसद सदस्यों को यहाँ पार्लियामेंट में नहीं आने दिया । सुब्रहमण्यम स्वामी जी इसके उदाहरण है कि वे लड़की का वेश धारण करके यहाँ आए ।... (व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी: यह चर्चा का विषय है ।... (व्यवधान)

डॉ. निशिकांत दुबे: स्पीकर महोदय, मैं केवल यह कह रहा हूँ कि आज भी आपके चेयर पर नहीं बैठने के कारण, जिस तरह से आपके पद की गरिमा का हास हुआ, उसके बाद भी कांग्रेस पार्टी जिस तरह से इस सदन में आचरण करती रही, आज भी जिस तरह से कांग्रेस पार्टी के सदस्य स्पीकर की टेबल को ठोक रहे थे, क्या इस तरह के संसदीय आचरण के साथ हम संविधान को चलाना चाहते हैं, लोक सभा को चलाना चाहते हैं? मेरा आपके माध्यम से आग्रह है, पार्टी की तरफ से आग्रह है, आपका जो निर्णय होगा, पार्टी का जो निर्णय होगा, हम सभी मानेंगे । लेकिन इसके लिए आचार संहिता आज तय हो जाए और जिस तरह से हम लोगों ने इस सदन को चलाने का प्रयास किया, कांग्रेस को साथ देने का प्रयास किया, जिस 14वीं और 15वीं लोक सभा की आपने बात की, हम इस तरफ कभी नहीं आए ।... (व्यवधान) हमने स्पीकर की गरिमा का कभी हास नहीं किया । स्पीकर की गरिमा कैसे बनेगी, संसद की गरिमा कैसे बनेगी और प्रजातंत्र की कैसे रक्षा होगी, उसका भी फैसला हो जाए । तब आप जो फैसला

करेंगे, हम लोगों को लगेगा कि आपने एक न्याय के आसन पर एक अच्छा फैसला किया और पार्टी आपके साथ है। जय हिन्द, जय भारत।

श्री रितेश पाण्डेय (अम्बेडकर नगर): अध्यक्ष महोदय, आप पुनः पीठ को महिमामंडित कर रहे हैं, इसके लिए हम सभी को आज बहुत प्रसन्नता है।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, सदन पीठ से ही संचालित होता है और पीठ की गरिमा को बनाए रखना, यह हर एक सदस्य का दायित्व है। मेरा यह मानना है कि पिछले कुछ दिनों में यह जो भी हरकत हुई है, यह अति निंदनीय है और इसकी पुनरावृत्ति फिर से नहीं होनी चाहिए। लेकिन मैं यह जरूर कहना चाहूँगा, मैं नया सदस्य हूँ, लोक सभा में पहली बार आया हूँ, इससे पहले मैं उत्तर प्रदेश विधान सभा में था। अध्यक्ष महोदय, एक चीज का ध्यान हम लोगों को जरूर रखना पड़ेगा कि हम सब अपने नेताओं को अपना आदर्श मानते हैं और जब उन नेताओं के ऊपर टिप्पणियाँ होने का काम होता है, चाहे वह विपक्ष के लोग सत्ता पक्ष के नेताओं के बारे में करें या सत्ता पक्ष के लोग विपक्ष के नेताओं के बारे में करें, तो यह स्वाभाविक है कि जिसके नेता के ऊपर टिप्पणियाँ होती हैं, उसके फॉलोअर उसको बर्दाश्त नहीं कर पाते हैं, जिसकी वजह से सदन अव्यवस्थित होता है और एक चीज से बढ़ कर चीजें आगे बढ़ती चली जाती हैं और यहाँ तक कि फिर वह पीठ की भी गरिमा के ऊपर पूरी तरह से एक काला धब्बा लगाने लगता है। मेरा आपसे निवेदन है कि आपने अभी मीटिंग में कुछ मुद्दों के ऊपर चर्चा की है। उसमें जो सदस्य सस्पेंड हुए हैं, उसके ऊपर भी आपने चर्चा की है। आपके पास वह पूरा अधिकार है, पूरे सदन ने आपको वह अधिकार दिया है, हमने भी आपको अधिकार दिया है। मैं यहाँ से आपको पूरी तरह से यह भरोसा दिलाना चाहता हूँ कि बहुजन समाज पार्टी और बहन कुमारी मायावती जी के निर्देशानुसार, बहुजन समाज पार्टी कभी भी वेल में नहीं जाती है और कभी भी कोई ऐसी चीज नहीं करेगी, जिससे सदन को और पीठ को या कहीं न कहीं उसकी गरिमा के ऊपर लांछन लगे।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपको यह भरोसा दिलाता हूँ कि हमारी पार्टी हमेशा की तरह सारे अनुशासनों का पालन करेगी और बहुजन समाज पार्टी एक आदर्श के रूप में हमेशा आपके नेतृत्व के नीचे काम करेगी। बहुत-बहुत धन्यवाद।

SHRI P.K. KUNHALIKUTTY (MALAPPURAM): Sir, all of us requested the hon. Speaker to come back and take his seat in the House which has happened. All of us are very happy about that.

When we talk about keeping the decorum of the House and maintaining the decorum of the House, we should also think about what led to all these issues. I totally agree with Shri Jayadev Galla who mentioned the recent events. There is turmoil in the country and a lot of people think that their citizenship is at risk. This is what the people of the country think at present. We have no clarity and we have no answer to the question whether their citizenship is at risk or not.

The Government is duty-bound to give a clear answer to that. Agitations are going on in the country. Any agitation, at any time, has its own risk of leading to a law and order problem. The Delhi incident has resulted in the death of a number of people. Parliament closing its eyes during such times will lead to the problem. Can we hope that nothing will happen and we can go peacefully without having a discussion? This is also a question. We should think about what made the Members to go to the Well. Nobody would like to go to the Well of the House. Going to the Well and shouting slogans or sitting in the Well is not easy. It is better to peacefully sit here and speak. It is quite comfortable here. Why should Members go to the Well and shout slogans? It is a difficult job.

So, the Government also has some role to play. The Government could have taken a lenient view and could have discussed what happened in Delhi in front of our nose. Few minutes could have been given to discuss that. That is also an issue.

As Shri Jayadev Galla has said, hon. Defence Minister is here, the Government should give some clarity on the NPR and NRC. Why is the Government silent on that? The Government should give answer to the nation as to whether some people in the country will lose their citizenship or not. Who has the right to take away the citizenship of the people? The Government should give answer to it.

All of us have committed to the hon. Speaker to keep decorum and maintain dignity. We have given a word and we will keep our word. There is no doubt about that. But I would say that to a certain extent, the Government also has some responsibility to clarify certain things.

माननीय अध्यक्ष : सभी माननीय सदस्य संक्षिप्त में अपनी बात कहें ।

श्रीमती अनुप्रिया पटेल (मिर्जापुर): आदरणीय अध्यक्ष जी, सबसे पहले तो मैं आपका अपनी पार्टी की ओर से हृदय पूर्वक आभार व्यक्त करना चाहती हूँ कि आप कई दिनों के बाद आज पुनः अपने आसन पर विराजमान होकर इसकी शोभा बढ़ा रहे हैं । पिछले दिनों हमें आपकी कमी बहुत महसूस हुई । हम सभी जानते हैं कि सदन में गतिरोध ऐसे भयानक स्तर पर पहुँचा कि आपको उससे पीड़ा हुई और आपने सदन में उपस्थित न रहने का निर्णय किया, लेकिन आपके न रहने से हम सबने सदन में उस अधूरेपन को महसूस किया है और आज सभी पार्टियाँ, चाहे सत्ता पक्ष की हों या विपक्ष की हों, सभी प्रसन्नचित्त हैं कि आप पुनः अपने आसन पर विराजमान हुए हैं । हम सभी यहाँ चुनकर आते हैं, क्योंकि हमारी लोकतंत्र में आस्था है, इस लोकतंत्र के मंदिर में आस्था है । हम जनहित

के कार्य करने के लिए आते हैं, सार्थक चर्चाएं करने के लिए आते हैं । इसके साथ ही इस लोकतंत्र के मंदिर की गरिमा को, इसकी मर्यादा को बनाए रखना भी हमारा नैतिक कर्तव्य है । इस सदन में नोक-झोंक हो, यह तो बड़ी स्वाभाविक सी बात है, लेकिन इस नोक-झोंक का स्तर ऐसा हो जाए कि हम एक-दूसरे के साथ हाथापाई की नौबत पर पहुँच जाएं या स्पीकर की डेस्क पर जाकर हम कागज फेंकने लगें, मेज थपथपाने लगें और उससे भी बदतर हम एक-दूसरे के विरुद्ध व्यक्तिगत टिप्पणियाँ करने लगें, तो यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है । हमारे एक सम्माननीय सदस्य हैं, एक दल के नेता भी हैं, उन्होंने हमारे अपोजिशन के एक नेता के खिलाफ, उनके परिवार के विरुद्ध एक बहुत ही आपत्तिजनक व्यक्तिगत टिप्पणी की । वहीं हमारी अपोजिशन पार्टी की ओर से जब प्लैकार्ड लेकर वेल में आया गया, तो हमारे माननीय गृह मंत्री जी के खिलाफ भी एक व्यक्तिगत रूप से गलत शब्द का उपयोग किया गया, जो सदन में शायद बहुत आपत्तिजनक है ।

महोदय, मैं ऐसा मानती हूँ कि संयम की आवश्यकता दोनों पक्षों को है, चाहे सत्ता पक्ष हो, चाहे विपक्ष हो । अगर हम संयम का दायरा बरकरार नहीं रखेंगे, तो गतिरोध का स्तर भयानक हो जाएगा और ऐसी परिस्थितियाँ बार-बार इस सदन में विकसित होंगी । मैं आपसे इतना ही कहना चाहती हूँ कि हम सारे अलग-अलग दलों के लोग जो यहाँ पर आते हैं, अपने आचरण को हम सकारात्मक रखें, सदन की मर्यादा को ठेस न पहुँचाएं, यह हम सबकी व्यक्तिगत जिम्मेदारी भी है, हमारी पार्टी लाइन पर भी हमारी जिम्मेदारी है । हम सभी एक-दूसरे के मित्र भी हैं, सहयोगी भी हैं, कलीग भी हैं, किसी के भी खिलाफ अगर कोई कड़ी कार्रवाई होती है, तो सभी को दुख पहुँचता है ।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे सिर्फ इतना ही कहना चाहती हूँ कि किसी भी व्यक्ति का आचरण यदि सकारात्मक नहीं है और सदन की गरिमा को ठेस पहुँचाता है तो निश्चित रूप से कुछ न कुछ अनुशासनात्मक कार्रवाई होनी चाहिए, लेकिन ऐसी भी न हो कि किसी का कोई अहित हो जाए । हम आपमें बहुत आस्था रखते हैं । हमें पूरा विश्वास है कि आपके स्तर से कभी किसी का अहित नहीं होगा । मेरी पार्टी के सदस्यों की संख्या इतनी नहीं है, लेकिन हम वेल

में आने में यकीन नहीं रखते हैं । हमने सदैव प्रयास किया है कि सार्थक रूप से हम अपना योगदान दें और यह सदन सुचारू रूप से चले । आगे भी मेरा यही प्रयास होगा । आपका पुनः बहुत-बहुत अभिनंदन, बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री असादुद्दीन ओवैसी (हैदराबाद): मोहतरम स्पीकर साहब, आज आपको कुर्सी सदारत पर दोबारा देखकर बड़ा इतमिनान हुआ । इस ऐवान को कामयाबी से चलाना, उसूल और अदब के दायरे में रखकर इस ऐवान को चलाने की जिम्मेदारी यकीनन अपोजिशन पार्टिज़ की भी है । यह सिर्फ आपकी जिम्मेदारी नहीं है । मगर अखलाकी और आईनी तौर पर सबसे बड़ी जिम्मेदारी सरकार की होती है । खासतौर से हम तमाम सियासी पार्टी के अराकीन को इस बात का नोटिस लेना चाहिए, इसका ख्याल रखना चाहिए कि इक्तिदार हमेशा किसी पार्टी के पास नहीं रहा, जैसा अंग्रेजी में कहते हैं कि Power is not eternal. आज अगर हम कोई बदअखलाकी या शर्मिंदगी का काम यहाँ पर करते हैं तो आने वाली नस्ल इससे ज्यादा बदतमीजी करेगी । खास तौर से मेरी इन दोनों कौमी पार्टियों से गुजारिश है कि वो खुद इस बात का नोटिस कर लें । यकीनन निशिकांत दुबे ने जो बात कही, उन्होंने सही कहा । मैंने भी बैठकर यहाँ पर देखा था कि इसी एवान में टेबल पर पैसे डाले गए थे । अब कौन उस वक्त यहाँ बैठा था, वह अक्लमंद है, जानते हैं, मगर मैं दोहराना नहीं चाहता हूँ । मैंने वर्ष 2006 में यह भी देखा था कि एक एमपी ने यहाँ पर आकर अपने फाइल्स डिष्टी स्पीकर पर फेंक दिए थे । वह भी हमने देखा था । उस वक्त कौन थे, हम जानते हैं । मगर यह जिम्मेदारी सब की है । यकीनन अपोजिशन की तरफ से जो एहतजाज हो रहा था, यह इसलिए हो रहा था कि दिल्ली में जो नस्लकशी हुई है, उसके बारे में इस ऐवान में बहस हो । आपने फैसला लिया, हम इसका खैर मकदम करते हैं ।

स्पीकर साहब, मैं आपसे गुजारिश करता हूँ कि जो मोअज्जिज़ अराकीन को गवर्नमेंट के रेजोलूशन पर सस्पेंड किया गया है, इनकी मुअत्तली को वापिस

کیا जाए । इनको दोबारा इस ऐवान में आकर अपनी बात को रखने का और हकुमूत के खिलाफ एहतिजाज करने का मौका मिले । शुक्रिया ।

جناب اسدالدين اويسى (حيدرآباد): محترم اسپيڪر صاحب، آج آپ کو كرسى صدارت پر دوباره ديكھ کر بڑا اطمینان ہوا۔ اس ایوان کو کامیابی سے چلانا، اصول اور ادب کے دائرہ میں رکھ کر اس ایوان کی چلانے کی ذمہ داری یقیناً اپوزیشن پارٹیوں کی بھی ہیں، یہ صرف آپ کی ذمہ داری نہیں ہے۔ مگر اخلاقی اور آئینی طور پر سب سے بڑی ذمہ داری سرکار کی ہوتی ہے۔ خاص کر ہم تمام سیاسی پارٹیوں کے اراکین کو اس بات کا نوٹس لینا چاہیے، اس کا خیال رکھنا چاہیے کہ اقتدار ہمیشہ کسی پارٹی کے پاس نہیں رہتا ہے، جیسا انگریزی میں کہتے ہیں کہ **Power is not eternal**۔ آج اگر ہم کوئی بد اخلاقی یا شرمندگی کا کام یہاں کرتے ہیں تو آنے والی نسل اس سے زیادہ بد تمیزی کرے گی۔ خاص طور سے میری ان دونوں قومی پارٹیوں سے گزارش ہے کہ وہ خود اس بات کا نوٹس کر لیں۔ یقیناً نشی کانت دوبے جی نے جو بات کہی انہوں نے سہی کہا۔ میں نے بھی بیٹھ کر یہاں پر دیکھا تھا کہ اسی ایوان میں ٹیبل پر پیسے ڈالے گئے تھے۔ اب کو اُس وقت یہاں بیٹھا تھا، وہ عقلمند ہیں، جانتے ہیں، مگر میں دوہرانا نہیں چاہتا ہوں۔ میں نے سال 2006 میں یہ بھی دیکھا تھا کہ ایک ایم پی۔ نے یہاں اپنی فائلز ڈپٹی اسپیکر کی طرف پھیک دی تھی۔ وہ بھی ہم نے دیکھا تھا۔ اس وقت کون تھے ہم جانتے ہیں، مگر یہ ذمہ داری سب کی ہے۔ یقیناً اپوزیشن کی طرف سے جو احتجاج ہو رہا تھا، یہ اس لئے ہو رہا تھا کہ دہلی میں جو نسل کشی ہوئی اس کے بارے میں اس ایوان میں بحث ہو۔ آپ نے فیصلہ لیا ہم اس کا خیر مقدم کرتے ہیں۔

اسپیکر صاحب، میں آپ سے گزارش کرتا ہوں کہ جن معزز اراکین کو گورنمنٹ کے ریزولوشن پر سسپینڈ کیا گیا ہے، ان کی معطلی کو واپس لیا جائے، ان کو دوبارہ اس ایوان میں آکر اپنی بات کو رکھنے کا اور حکومت کے خلاف احتجاج کرنے کا موقع ملے۔
شکریہ۔۔۔

श्री भगवंत मान (संगरूर): बहुत-बहुत धन्यवाद, स्पीकर महोदय । सबसे पहले आपका वेलकम बैक और इस कुर्सी पर वापस आना, हमारे लिए सुखद है । आपके बिना यह सदन सूना-सूना लगता था । हम आपकी स्माइल को मिस करते थे । जिस तरह मेरे से पहले बोलने वाले सभी वक्ताओं ने कहा कि हमारी भी

जिम्मेदारी बनती है कि हम सदन को अच्छी तरह से चलाने में आपका सहयोग करें। इस चेयर की जो गरिमा है, उसको कायम रखा जाए। पिछले दिनों जो हुआ, वह बहुत ही निंदनीय है। चूंकि हम नए-नए चुनकर आए हैं, मैं दूसरी बार आया हूँ। हमें यहां पर आकर बोलने का जुनून है। हमें लोगों को जवाब देना है। बहुत से लोगों ने हमसे पूछा कि आज हमारा सवाल क्यों नहीं उठा, आज हमारा सवाल क्यों नहीं लगा। हम उनको क्या जवाब दें कि हाउस नहीं चल रहा है? हाउस क्यों नहीं चल रहा है, यहाँ शोर-शराबा हो जाता है।

सर, एक एमपी 15 लाख लोगों को रिप्रजेन्ट करता है। अगर सात सदस्य बाहर हैं तो 1 करोड़ से ज्यादा लोगों के प्रतिनिधि इस संसद से बाहर हैं। मैं खुद एक सेशन में बाहर था। जब पिछली लोक सभा में मैंने एक छोटी-सी वीडियो बना ली थी तो उसकी वजह से मुझे पूरा सेशन बाहर रहना पड़ा। उस समय मैडम स्पीकर ने मुझे सजेस्ट किया था। मैं बाहर रहने का ज्यादा दर्द जानता हूँ।

सर, मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि माननीय सदस्यों को वापस लिया जाए। मैं एक बात और भी कहना चाहता हूँ कि आप हाउस के कस्टोडियन हैं और आप सभी को मौका देते हैं। आप डेढ़-डेढ़ घंटे तथा पौने दो-दो घंटे जीरो ऑवर भी चला लेते हैं। उस जीरो ऑवर की जगह अगर उसका जीरो टू ऑवर बोल दिया जाए तो भी मेरे ख्याल में कुछ गलत नहीं होगा। सभी को मौका मिल रहा है। जो पहली मर्तबा जीतकर आए हैं, उनको भी मौका मिल रहा है। मैं आपकी इस दरियादिली का बहुत फैन हूँ और आपका बहुत आदर भी करता हूँ। आपने मुझे चेम्बर में बुलाकर समझाया था, जैसे एक टीचर विद्यार्थी को समझाते हैं। मैं उसका पालन भी करूँगा। मैं चाहता हूँ कि हाउस में 'All is well' रहना चाहिए, 'All in well' नहीं रहना चाहिए।

SHRI N. K. PREMACHANDRAN (KOLLAM): Sir, first of all, we all express our pleasure in seeing you back in the Chair after 2-3 days. For maintaining the decorum and dignity of the House, I feel that the Government as well as the Opposition is having equal responsibility

because it is the right of the Opposition to dissent. The dissent need not be agreed to by the Government. But if we examine the second Session of the Seventeenth Lok Sabha and first part of the third Session also, we would find that the entire Opposition had fully cooperated with the Government. It was the highest productive Session. No fault was found on the part of the Opposition. We fully cooperated and even the hon. Prime Minister had congratulated the entire Members of the House. He said that we had a very productive Session. We had differences on so many legislations but we had all cooperated even without having micro level scrutiny of the Bills by the Standing Committees. Many legislations were passed.

But it is quite unfortunate to see things which happened during the last four days. I am not going to repeat it but we all know it. I am not opening the issues but we demanded a discussion under Rule 193 regarding Delhi riots. But unfortunately, the Government was not willing to concede to the demand of the Opposition because of the reasons best known to the Government. Anyway, finally it has been agreed to.

We do not feel happy in coming to the Well as has been said just now by Shri P.K. Kunhalikutty. It is not a good thing. We have to keep and maintain the decorum of the House. Definitely, we will do it and we would render full support.

Sir, on 4th March, 2020, I also went to the Well. I had gone to that side because Vivad Se Vishwas Bill was being passed in the din. My Statutory Resolution was there and I had very strong amendments also. Three very important Bills were passed. So, that was the provocation which made me go to the Well. I am really sorry for that. I want to say

that it is not a very good thing as far as a Member of Parliament is concerned going there and making noise. I am really sorry for that but the Government has to take care of the Opposition. The Opposition should be taken into confidence by the Government. Even if the Government wants to pass some urgent legislations in the din, let the Opposition be taken into confidence by the Government. I think such a communication gap was there between the Government and the Opposition. Suppose it is decided to pass some legislation as it is important as far as the Government and the country are concerned, definitely the Opposition will agree to that. Such a consensus, mutual cooperation and communication are highly essential to run the House in a smooth manner. This is a suggestion which I would like to make.

On behalf of all of us, I also appeal to the hon. Chair to please revoke the suspension of all the seven Members. Let the House function in a smooth way with the cooperation of the Opposition. The Government should always take the Opposition into confidence.

With these words, I conclude.

माननीय अध्यक्ष : मोहनभाई सांजीभाई देलकर जी सेवेथ टाइम मेंबर ऑफ पार्लियामेंट हैं ।

श्री मोहनभाई सांजीभाई देलकर (दादरा और नागर हवेली): सर, मैं आपका आभारी हूँ कि आपने मुझे इस विषय पर दो शब्द बोलने का मौका दिया । मैं इंतजार कर रहा था कि आप मुझे दो शब्द बोलने का मौका दें, क्योंकि मैं दो शब्द बोलना चाहता था । आपके बिना यह हाउस सूना-सूना लग रहा था । हम इंतजार में थे कि आप कब आएँ, कब विराजमान हों और वापस हमारा हाउस

सही ढंग से, सुचारु रूप से चले, यह हम इंतजार कर रहे थे । हम आपका धन्यवाद करते हैं कि आप आसन पर विराजमान हुए ।

सर, हमने देखा कि आपका दिल बहुत बड़ा है, आपका स्वभाव भी बहुत सकारात्मक है और इसलिए सारे सदस्यों ने एक बात कही कि आपने बहुत सुचारु ढंग से हाउस को चलाया । सबसे बड़ी बात जो रही कि यहां पर काफी नए सदस्य आए हैं और आपका यह विचार रहा, आपका यह निर्णय रहा कि सारे नए सदस्यों को आपने बोलने का मौका दिया कि वे अपने-अपने क्षेत्र की बात यहां पर रखें और उनको मौका मिले । उनको ऐसा लगे कि मैं हाउस में चुनकर गया हूं, तो मुझे बोलने का मौका मिला है । आपने यह निर्णय लिया, मैं आपको इस बात के लिए धन्यवाद देता हूं ।

हमने पिछले दो सत्रों में देखा और इसका जिक्र महामहिम राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में था कि पिछले दो सत्रों में ऐतिहासिक काम संसद में हुआ । कीर्तिमान बना, कई बिल संसद में पास हुए, कई काम हुए, ये सब आपके नेतृत्व में हुआ । आपने अच्छे ढंग से हाउस चलाया है ।

मैं एक ही बात कहना चाहता हूं कि संसद की गरिमा और मर्यादा को बनाए रखना अध्यक्ष की जिम्मेदारी रहती है । यह आपकी जिम्मेदारी बनती है और उसी तरह सदस्यों की भी जिम्मेदारी है कि हम मर्यादा भंग न करें । अगर हम मर्यादा भंग करेंगे तो हाउस की गरिमा, संसद की गरिमा बचाए रखना आपकी जिम्मेदारी है, डिसिप्लिन को बनाए रखना आपकी जिम्मेदारी है और वह कार्य आपने किया है । हमें सम्पूर्ण विश्वास है कि आगे भी आप सुचारु और सही ढंग से संसद को चलाएंगे ।

जहां तक निर्णय का सवाल है, जैसा कि मैंने पहले भी कहा है कि आपका दिल बहुत बड़ा है, आपका स्वभाव भी बहुत सकारात्मक है, आप सही निर्णय लेंगे, हमें ऐसा पूर्ण विश्वास है । बहुत-बहुत धन्यवाद ।

डॉ. एस. टी. हसन (मुरादाबाद): माननीय अध्यक्ष जी, बहुत-बहुत शुक्रिया । आज आपको देखकर बड़ा सुकून और इत्मिनान हो रहा है । अध्यक्ष जी, यकीन

जानिए जब आप इस सीट पर बैठे होते हैं तो हम लोगों को गार्जियनशिप का अहसास रहता है । आपका शुक्रिया **कि** आप यहां तशरीफ ले आए ।

अध्यक्ष जी, जो कुछ हुआ, हम सबको उसका खेद है । सदन को सुचारु चलाना हमारी, आपकी और सत्ता पक्ष सबकी जिम्मेदारी है । हम सब सदन को सुचारु रूप से चलाना चाहते हैं । मैं आपसे इतना जरूर कहना चाहता हूं कि देश की परिस्थितियों को देखते हुए आज अगर हम इस सदन में बैठे हैं तो इंसान और इंसानियत की बात करने के लिए बैठे हैं । हमारा सर्वोपरि आइडिया होना चाहिए कि इंसान की बात की जाए, इंसानियत की बात की जाए, बाकी काम तो होते ही रहते हैं । इसीलिए हम आपसे जिद कर रहे थे कि आप दिल्ली रायट्स पर बोलने का मौका दीजिए, **क्योंकि** देश में इस वक्त बहुत बड़ा अनरैस्ट है । आपने मौका दिया, टाइम जरूर लगा, मैं आपका शुक्रगुज़ार हूं ।

मैं आगे भी उम्मीद करता हूं कि अध्यक्ष के रूप में, आपके नेतृत्व में सारा साल हम लोग अच्छी तरह से, सुचारु रूप से सदन चलाएंगे ।

ADV. A.M. ARIFF (ALAPPUZHA): Hon. Speaker, Sir, I would like to submit that as like Freedom of Expression exists both inside and outside the House, there is also Freedom of Protest. Here, in the House, the Members from the Opposition were demanding for a discussion on the recent Delhi riots. So, I would like to request you to kindly withdraw the suspension against the Members of the Opposition.

Thank you.

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, सभी दलों के नेताओं ने, सत्ता पक्ष की तरफ से माननीय मंत्री जी और सदस्यों ने अपने विचार रखे हैं । सभी का विचार है कि दुनिया में भारत देश सबसे बड़ा लोकतंत्र है । इस देश के लोकतंत्र की प्रतिष्ठा पूरे विश्व में है । भारत के लोकतंत्र, विचार, स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति की चर्चा विश्व के सदनों में होती है । पिछले 17 लोक सभा सत्रों से हमने इस देश में कई उतार-चढ़ाव देखे, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक चुनौतियों के लिए

सदन में चर्चा हुई, संवाद हुआ, वाद हुआ और जब भी सदन या संसद पर बात आई तो सभी दलों ने संसदीय मर्यादाओं के लिए चर्चा की, सबने प्रयास किया कि संसद की मर्यादा बढ़नी चाहिए ।

क्योंकि यह देश की 130 करोड़ जनता की अपेक्षाओं और अकांक्षाओं का मन्दिर है । यहां जो माननीय सदस्य चुनकर आते हैं, वे जनता की बातों को अभिव्यक्त करते हैं । सब चाहते हैं कि सदन पवित्रतम रहे । इसमें वाद-विवाद, संवाद और चर्चा स्वस्थ रूप से हो । मुझे आप सबने यह दायित्व सौंपा । पिछले आठ महीने संसद में आप सबके सहयोग से एक कीर्तिमान हासिल हुआ । संसद लंबे समय चली । उसमें महत्वपूर्ण विधेयक पारित हुए और सदन में कभी-भी व्यवधान पैदा नहीं हुआ । इससे जनता का विश्वास और भरोसा संसद के प्रति और बढ़ा । मैं कह सकता हूं कि यह सब आप सबके सहयोग से ही संभव हुआ । मेरा विचार यह था कि जब सदन कभी व्यवधान के बाद भी स्थगित नहीं हुआ तो मैंने भी सोचा कि कोशिश यह हो कि कभी व्यवधान न हो, सदन कभी स्थगित न हो । सदन की अपेक्षाओं के अनुरूप यह मेरे मन की इच्छा थी । जब भी मैं जनता के बीच जाता था तो लगता था कि सदन के प्रति लोगों का विश्वास और भरोसा और बढ़ता जा रहा है । मुझे याद है, वर्ष 2014 में माननीय प्रधान मंत्री जी ने, जो सदन के नेता हैं, जब सदन में प्रवेश किया था तो उन्होंने एक मन्दिर की तरह मत्था टेककर सदन की गरिमा बढ़ाने का काम किया । एक संदेश पूरे विश्व में गया था कि इस लोकतंत्र के मन्दिर की प्रतिष्ठा कितनी बड़ी है, इस सदन की प्रतिष्ठा कितनी बड़ी है । क्योंकि सदन की प्रतिष्ठा जितनी बड़ी होगी, माननीय सदस्य अपना विचार रखेंगे, अभिव्यक्त करेंगे तो निश्चित रूप से उस माननीय सदस्य की गरिमा भी बढ़ेगी और वे जनता की अपेक्षाओं और अकांक्षाओं को भी पूरा कर पाएंगे ।

पिछले दिनों जो भी घटना घटी, उससे मुझे व्यक्तिगत रूप से पीड़ा हुई, मैं व्यक्तिगत रूप से दुःखी हुआ । शायद कोई दुःखी नहीं हुआ होगा, किसी को पीड़ा नहीं पहुंची होगी । सदन के अंदर पर्चे फेंकना, सदन के मार्शल से आकर कागज छीनना, सदन में प्लैकार्ड लाना, फिर मुझे कई उदाहरण दिए गए कि सदन में इससे भी ज्यादा घटनाक्रम हुए हैं । क्या हम पिछले घटनाक्रमों को

उचित मानते हैं? जो भी घटनाएं घटीं, क्या हम उनकी पुनरावृत्ति करना चाहते हैं? मैं यह विश्वास दिला सकता हूं कि आप जिस विषय पर चर्चा, संवाद या बातचीत करना चाहेंगे, मैं सत्तापक्ष और प्रतिपक्ष दोनों सदस्यों से बातचीत करके हर चर्चा और संवाद को कराने का प्रयास करूंगा। मैं कभी भी नहीं चाहता कि सदन में व्यवधान पैदा हो। यदि कोई परिस्थिति बनती है तो चैम्बर में बैठकर विचार-विमर्श हो जाएगा, बातचीत हो जाएगी। आज सर्वदलीय बैठक में मैंने दो बातें कहीं। मुझे अच्छा लगा कि कई दलों ने अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की कि हमारे दल के नेता कभी भी वेल में नहीं आएंगे।

मैं इस आसन पर बैठा हूं। इस आसन की एक मर्यादा है। व्यक्ति आएंगे और चले जाएंगे, लेकिन हमेशा इस आसन की मर्यादा बनी रहेगी। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि आपने जो विश्वास मुझ पर व्यक्त किया है, मैं उस विश्वास में कभी कमी नहीं आने दूंगा। दलों की गिनती या संख्या के आधार पर सदन नहीं चलेगा और सदन के नेता और उपनेता ने भी यह अभिव्यक्ति की थी कि हम संख्या के बल पर नहीं, बल्कि सदन में अच्छी चर्चा के आधार पर सदन चलाएंगे। जब हम अपना मत रखते हैं तो मतों में भिन्नता हो सकती है। सभी अपने-अपने दलों से चुनकर आते हैं तो विचारों में भिन्नता हो सकती है। उनकी विचारधारा और उनकी मान्यताओं को सदन में रखा जाता है। सहमति और असहमति भारत के लोकतंत्र का मर्म है। इसमें कटाक्ष भी होना चाहिए, व्यंग्य भी होना चाहिए, लेकिन मर्यादा के रूप में होना चाहिए। इसलिए आज सदन के सभी नेताओं ने सर्वसम्मति से यह मत रखा है कि हम सदन की कुछ मर्यादाओं को रखेंगे। हमारी माता और बहनों के बीच जो भी घटनाक्रम हुआ है, इस वेल से उस वेल में न जाना और आरोप-प्रत्यारोप न लगाना, आरोप-प्रत्यारोप लगाने की अभिव्यक्ति है, लेकिन आपने जिस विषय पर चर्चा की है, उस पर किसी को चिह्नित करके आरोप-प्रत्यारोप न लगाना। यहां पर प्लैकार्ड्स की आवश्यकता नहीं है। यह मंदिर है, गर्भगृह है तो कोशिश करें कि आप वेल में न आएँ। मैं कोशिश करूंगा कि सदन की व्यवस्थाओं को देखकर आप लोगों से चर्चा करूँ और बातचीत करूँ ताकि ऐसी परिस्थितियाँ पैदा नहीं हों। मैं अपेक्षा करता हूँ कि इस आसन से कभी कोई सदस्य निलंबित या निष्कासित ना हो। आप मुझ पर

विश्वास रखें, भरोसा रखें। आप केवल सदन की मर्यादा को बनाकर रखें, इसकी मर्यादा को कभी कम ना करें, क्योंकि अगर सदन की मर्यादा कम हो जाएगी तो देश के अन्दर लोगों का लोकतंत्र के प्रति विश्वास कम हो जाएगा। हमें भारत की संसद से लेकर पंचायत तक के लोकतंत्र को संदेश देना है। देश में एक अच्छा और स्वस्थ संदेश जाना चाहिए। देश की ग्राम पंचायत में भी संसद की तरह चर्चा हो, यह हम देश के लोकतंत्र के अन्दर चाहते हैं। देश के सभी पीठासीन अधिकारियों से मेरी चर्चा हुई है। सभी अलग-अलग दल की विचाराधारा से आए हुए पीठासीन अधिकारी हैं और सभी पीठासीन अधिकारियों का एक ही मत है कि हम सभी को लोकतंत्र की मर्यादा को बढ़ाना है। माननीय मंत्री जी क्या आप कोई प्रस्ताव रखना चाहते हैं?

संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा भारी उद्योग और लोक उद्यम मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अर्जुन राम मेघवाल): आदरणीय अध्यक्ष जी, आपने जो अभी विचार प्रकट किया है कि हमें पार्लियामेंट से लेकर पंचायत तक यह संदेश इस लोकतंत्र के मंदिर से देना है, अभी सर्वदलीय बैठक में विषय आया था तब भी आपने कहा था, आपने तीन आचार संहिता बनाने की बात की थी। मैं टेक्निकल मुद्दे के तौर पर यह प्रस्ताव रखूंगा, क्योंकि इसी आसन से घोषणा हुई थी कि 2 तारीख से लेकर 5 तारीख तक सदन में जो घटना घटी, उसके लिए एक कमेटी बनेगी। इसमें एक विषय टेक्निकल रहेगा। आपको वह देखना होगा। दूसरा विषय यह है कि 'रूल्स ऑफ प्रॉसिजर एण्ड कंडक्ट ऑफ बिजनेस इन लोक सभा' के नियमों के तहत सस्पेंशन के लिए तीन रूल बने हुए हैं। कई माननीय सदस्यों ने आरोप लगाया कि यह सरकार का फैसला था, लेकिन मैं कह रहा हूं कि यह रूल 374 (1) और (2) के तहत है। स्पीकर ने रूल 374 (1) के तहत सात लोग नामित किए थे और 374 (2) के तहत पार्लियामेंटी अफेयर्स मिनिस्टर की तरफ से मोशन आया था और यह फैसला सदन ने लिया था। यह फैसला सरकार ने लिया था, ऐसा कहना ठीक नहीं है।

Hon. Speaker Sir, I give a notice of my intention to move the following motion under Proviso to Rule 374 (2) of the Rules of Procedure and Conduct of Business in Lok Sabha:

“That this House resolves to terminate the suspension under the Proviso to Rule 374 (2) of the Rules of Procedure and Conduct of Business in Lok Sabha of Shri Gaurav Gogoi, Shri T.N. Prathapan, Adv. Dean Kuriakose, Shri Benny Behanan, Shri B. Manickam Tagore, Shri Rajmohan Unnithan, and Shri Gurjeet Singh Aujla with immediate effect who were suspended from the service of the House for the remainder of the Session on the 5th March, 2020.”

माननीय अध्यक्ष: श्री अर्जुन राम मेघवाल, संसदीय कार्य राज्य मंत्री ने सात सदस्यों के निलंबन को समाप्त करने का प्रस्ताव पेश किया है। अब मैं प्रस्ताव को सभा के समक्ष मतदान के लिए रखता हूँ।

प्रश्न यह है:

“कि लोक सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियमों के नियम 374(2) के परन्तुक के अंतर्गत, यह सभा संकल्प करती है कि 5 मार्च, 2020 को सभा द्वारा श्री गौरव गोगोई, श्री टी.एन. प्रथापन, एडवोकेट डीन कुरियाकोस, श्री राजमोहन उन्नीथन, श्री बैन्नी बेहनन, श्री बी. मणिकम टैगोर तथा श्री गुरजीत सिंह औजला के सत्र की शेष अवधि के लिए निलंबन के आदेश को तत्काल प्रभाव से समाप्त किया जाए।”

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

-

माननीय अध्यक्ष: प्रस्ताव स्वीकृत हुआ और सदस्यों का निलंबन समाप्त हुआ।

अब सभा की कार्यवाही 14.45 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है ।

14.37 hrs

*The Lok Sabha then adjourned till Forty Five Minutes past
Fourteen of the Clock.*

14.46 hrs

*The Lok Sabha reassembled at Forty Six Minutes past
Fourteen of the Clock.*

(Hon. Speaker in the Chair)

DISCUSSION UNDER RULE 193

Recent law and order situation in some parts of Delhi

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, नियम 193 के अधीन चर्चा से पहले मैं आपसे आग्रह करना चाहता हूँ कि आज की चर्चा महत्वपूर्ण है । जिन मुद्दों पर यह चर्चा है, उसके लिए मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि इस चर्चा के माध्यम से हम देश में सद्भावना का अच्छा वातावरण और भाईचारे को ज्यादा मजबूत

करने का काम करें । हमारे देश की जैसी संस्कृति है, यदि वैसे विचार संसद से जाएंगे, तो मुझे लगता है कि चर्चा बहुत सार्थक होगी ।

श्री अधीर रंजन चौधरी ।